माननीय मुख्यमंत्री, बिहार श्री नीतीश कुमार के द्वारा दिनांक– 15.05.2015 को दिये गये भाषण का ट्रांस्क्रिप्सन

मैं सबसे पहले आयोजकों को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने अपने इस सम्मेलन में मुझे भी आमंत्रित किया और मैंने देखा कि लोगों ने मुझे धन्यवाद दिया है। यूं तो आज–कल धन्यवाद कम ही लोग देते है। हमने जो किया है जो आप पर कोई मेहरबानी नहीं की है, मैं संतुष्ट हो गया कि जो आपकी मांग है, वो जायज है। एक जमाने से लोग कहते रहते थे और मेरा, मेरे नालन्दा जिले के उस गांव में खासकर के गौरी में पान की खेती वो करते थे और उनके पान की खेती को देखने के लिए लोग गये थे तो देखा की कितना नाजुक फसल है और किस प्रकार से लोगों को मेहनत करनी पड़ती है पान का उत्पादन करने के लिए। तो आप के मेहनत से भी वाकिफ हूँ और पान से तो सब का रिश्ता रहा है। हम भी पहले पान खुब खाते थे। इस लिए जब चौरसिया समाज के लोग अपनी मांग को रखते थे तो हमलोग तो उनका समर्थन करते थे या पान कृषक जब भी अपनी बात हमारे सामने रखते थे तब उनपर गंभीरता से विचार करते थे लेकिन अभी हाल में आपका जो एक तर्क था वो इतना सटीक था कि फिर उसके बाद मुझकों लगा कि जो आपका कथन है वो विल्कुल जायज है। इन्होंने कहा कि भाई जब कोई पूजा होता है, पूजा होती है या कोई भी कार्यक्रम होता है, अनुष्ठान होता है तो उसमें फूल की भी जरूरत पड़ती है और पान की भी जरूरत पड़ती है। तो फूल वाले को आपलोगों ने अति पिछड़ा बना दिया और पान वाले को छोड़ दिया। ये तर्क इतना सटीक था कि उसके बाद मैंने कहा कि यह बात आपलोगों ने पहले क्यों नहीं कही। हमसे मिलने गये थे तो कोई 150 लोग थे, तो जब इनकी बातचीत मैं सुन रहा था तो जब उनका क्लाईमैक्स आया तो क्लाईमैक्स यही था बातचीत का क्लाईमैक्स था, चरम था वह यही था। जब उनलोगों ने कहा तो हमने कहा कि और कुछ कहने की जरूरत नहीं है, और मैंने आश्वासन दिया था कि देखिये कार्रवाई चल रही है। जैसे ही कार्रवाई पूरी होगी हम

लोग जरूर इस पर विचार करेंगे। और आपके साथ न्याय करेगे तो आपके तर्क में दम था जब फूल वाला को मिला तो पान वाले को भी मिलना चाहिए। पान वाले को मिल गया तो ये तो आपका स्वभाविक हक है और जो आपको प्राप्त होनी है और पानवालों को बधाई देते है और फिर पान कृषकों की बात है तो मैं तो कहना चाहता हूं की पान की खेती होती है इसलिए पान की खेती करने वाले किसान है। इसमें तो कोई दो राय हो ही नहीं सकती है और पहले भी कहा सुभाष जी ने, और ये कहते रहे हैं कि पान की खेती को बढ़ावा देने के लिए या पान की खेती में लगे हुए लोगों की समस्याओं को समझते हुए उनकी कठिनाई को कम करने की कोशिश करनी चाहिए। तो इसके लिए चाहे जो भी कार्यक्रम हो यह हमने इसको कृषि रोड मैंप में भी पान की खेती को रखा है। इसलिए पान की तो खेती होती है, तो मैं यही करूंगा की कहां आप है। कोई गाड़ी अगर आगे नहीं बढ़ रही है, अटकी हुई है तो फिर हम एक ट्रेनिंग पान कृषकों के साथ करेंगे हम अपने अधिकारियों को भी रखेगे। आपकी जो वाजिब समस्या है उसके हल के लिए प्रयास करेंगे। जब हम केन्द्र में मंत्री थे हमने एक नालन्दा के लिए पान अनुसंधान केंद्र की स्थापना करायी थी तो यह कथन सही है कि दक्षिण बिहार में जो पान की खेती होती है तो वहां के समस्याओं पर तो बातचीत करने के लिए, अध्ययन करने के लिए एक छोटा सा सेन्टर बना लेकिन उत्तर बिहार में नहीं हुआ और मुझें बताया गया कि उत्तर बिहार में जो पूसा के साथ जुड़कर काम कर रहा था वही ट्रांसफर हो गया है तो ये बात तो पहले मुझे किसी ने बतायी नहीं। अगर ऐसी बात है तो राज्य सरकार दूर करेगी और हम बिहार कृषि विश्वविद्यालय, के अधीन जो अब सबौर में है दूसरा कृषि विद्यालय सबौर में है उस कृषि विश्वविद्यालय के लोगों के साथ बातचीत करेंगे। उसी दिन जिस दिन पान कृषकों की समस्या सुनेगें और हमारा यह प्रयास होगा की एक अनुसंधान केन्द्र उत्तर बिहार में भी खुलें और मेरे हिसाब से तो पान खाने का प्रचलन सब जगह है लेकिन उत्तर बिहार में दक्षिण बिहार की तुलना में कुछ ज्यादा ही हैं तो इसी लिए वहां पर

तो इसका जरूर प्रबंध होना चाहिए और हम सब करेंगे और इसके लिए हम मीटिंग बुलायेंगे वहां बैठेंगे रही बात राजनैतिक बात त देव कुमार चौरसिया जी तो बहुत जमाने से, हमलोगों ने जब पार्टी की स्थापना की तब से साथ जुड़े हुए हैं और हम जानते हैं कि हर आदमी जो लम्बे काम तक साथ रहता है बीच–बीच में कभी–कभी नाराज भी होता है, बिगड़ता भी है तो ये खास बात नहीं है। मालूम है कि भई और कुछ नही ंतो नाराज होने का हक तो सब को है ही, तो ये भी कुछ दिन के लिए नाराज हो गये अब बातचीत हो गयी है। और हम नाराजगी को दूर कर देंगे। ये नाराज हमसे नहीं रहते थे ये किन्ही और से होते है। संयोग से जिनसे इनकी नाराजगी है वह छोड़कर भाग चलें। उनका वह डोमेन है आपही का क्षेत्र है देखिये उसको और उस इलाके में काम देखिये जैसे पहले आप देखते रहें है। और हम तो, हम तो लगातार इनके यहां जाते रहे हैं और मै तो यह मानने को तैयार ही नहीं था कि ये नौ महीने से अलग है हम, तो इसको भुल जाईये। हमको यह याद नहीं रहता है आप भी भूल जाईये और इसके लिए कोई औपचारिक रूप से कोई फंकशन करने की कोई जरूरत नहीं है। अब आज आप यहां आ गए है तो और यही ंपर मुलाकात हो गयी और बाकी सब तो अब जब सब लोग इतना जोर से एक स्वर से साथ देने का वचन दे रहे हैं तो फिर जो साथ देगा उसका प्रतिनिधित्व नहीं होगा यह कही संभव है। इसके बारे में ज्यादा सोचने की जरूरत नहीं है। और मुझे खुशी है कि आप सब लोगों में पूरा जोश है आज जो मैं मुख्य रूप से बात करना चाहता हूं, एक बच्चे ने यहां भाषण दिया वो दूर खड़ा था और वो कुछ बोलना चाहता था और उसे मंच पर बुलाया गया और उसने बहुत ही तार्किक ढंग से अपनी बात रखी और आपलोगो से उसने डील की और यही कहा है कि बच्चों पर ध्यान दीजिए और बच्चों का भविष्य देश का भविष्य है और भविष्य तभी बनेगा जब सब शिक्षित बनेगे। और शिक्षा के संबंध में उस लड़के के मन में जो कलेयरिटी है स्पष्टता है मैं इसके लिए उस बच्चे को आर्शीबाद देता हूं की वह फले फूले, दोड़े आगे बढ़े। अब ये कोई ये नहीं कह

देगा कि बच्चा चूँकि नालन्दा जिले के मौरी का है इस लिए हम उसको कह दिये नहीं तो गड़बड़ हो जायेगी उसको टिशिएगा काहे उसका इतिहास पुराना है नालन्दा विश्वविद्यालय वहीं था तो उन सब इलाके में चाहे वो भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ और लगातार उस इलाके में भ्रमण करते रहे भगवान महावीर का भ्रमण होता रहा उनका तो महापरि निर्वाण भी हुआ तो उसी इलाके में तो उस इलाके के मिट्टी में कुछ बात आ गयी है आबोहवा ऐसी है कि जब एक बच्चा इतनी भाषण देता है और मेरी तो पूरी शुभकामना है मैं तो उसको बुलाउंगा पुरे, उनके पिता के साथ और वो देखिये मौरी से निकल कर निकलकर चला गया आरा और आरा में उसके पिता पान की दुकान खोले हुए है और बच्चे में इतनी प्रतिभा तो आज तो पुरे कार्यक्रम में आकर आप सब लोगों से मिलकर इतनी खुशी हुई लेकिन उस बच्चे से मिलकर बच्चे से मिलकर, मुझे बेहद प्रसन्नता हुई और आज जो उसके मन में बात आयी है जिसको उसने रखा है तो मैं तो उसको बुलाउंगा अलग से भी बुलाउंगा। और मैं व्यक्तिगत रूप से भी इस बच्चे के आगे बढ़ने के लिए कुछ कर सकता हूँ तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी ही। ऐसी क्या बात है कोई भी, कहीं पहुंच सकता है। हम लोग जिस भी परिवेश में पैदा हुए, कोई सोच नहीं सकता था कि भाई एम0पी0 बन जायेगा, मुख्य मंत्री की बात तो छोड़ दे, कोई एम0पी0 बने केन्द्र में मंत्री बने, राज्य में मुख्य मंत्री बने तो कोई बन सकता है और उस बच्चे ने बहुत सही बात उठाई जो सरकारी स्कूलों में नहीं पढ़ते हैं हमभी सरकारी स्कूल में पढ़े है। बचपन में तो पाठ्शाला में पढ़े पता नहीं, उसको मान्यता थी या नहीं थी घर से हमलोग बोरा लेकर जाते थे और उसी बोरा पर बैठते थे आजकल के बच्चों को तो मालूम ही नहीं है लेकिन हमलोग घर से अपने किताब का बस्ता और स्लेट और उसके साथ–साथ एगो बगल बोरा भी कांख में दबाकर जाते थे अपना अपना बोरा लेकर आईये और बिछाईये और उसपर बैठिये अइसही स्कूल चलता था आ.. उस समय शिक्षक को क्या मिलता था कुछ नहीं मिलता था कम्यूनिटी के द्वारा स्कूल चलाया जाता था और गणेश चतुर्थी होता है उसी

के अवसर पर जो गुल्ली डंडा खेल करके और किस प्रकार से घर–घर जाकर शिक्षकों के लिए चंदा वसुला जाता था और जिस घर में कोई जाता था उसके बच्चे के आंख में पट्टी बांध दी जाती थी और होता था कि चंदा तो उस समय होता था और घर के बाहर उसके वो गुल्ली डंडा से अपना पुरा बजाता था हमने हमलोग भी बजाते थे आ.. जिस बच्चे का घर सामने आता था उसके पहिले आंख पर पट्टी बांध दिया जाता था ताकि मां देखे की मेरे बेटे के आंख पर पट्टी बंधी हुई है आ जब मां कुछ देगी दान में तब उसकी आंख का पट्टी खुलेगा ये परम्परा थी आ... हमलोग जाते थे जहां पढ़ाते थे पहले झाडू देने का काम भी लड़का करता था बच्चा करता था। तो हमलोग वहीं से पढ़े है। उसके बाद फिर सरकारी प्राइमरी स्कूल में, मीडिल स्कूल में और उस समय जब पढ़ाई होती थी मीडिल स्कूल में तो साथ–साथ कोई न कोई हुनर सिखाया जाता था हमलोगों को भी सिखाया जाता था मीडिल स्कूल में पढ़ते थे उस समय बापू का बुनियादी शिक्षा का जो कंसेप्ट था उसके आधार पर लोगों को कोई न कोई कौशल/हुनर सिखाया जाता था तो हमलोगों को हथकरघा चलाना सिखाया जाता था और आज भी हम नहीं भुलते कि हम भी हथकरघा चलाते चलाते एक गमछा बुने थे आज चाहे कुछ भी मिल जाये लेकिन इस बात को नहीं भूल सकते और उस सरकारी, सरकारी स्कूल क्या सरकार से मान्यता मिलती थी कमिटि चलाती थी। शिक्षकों को कितना मिलता था जो हम चर्चा किये जो पढ़ाते थे वो मन से पढ़ाते थे और उसी साधारण स्कूल में पढ़े हुए वो सब बाद में सरकारी करण हो गया तो उसी सिस्टम से पढ़कर हमलोग आय साइंस कॉलेज में पढ़े इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़े और आज बिहार के लोगों की खिदमत कर रहे है ये कौन कहता है कि निजी स्कूलों में पढ़कर के ही बच्चे आगे बढ़ेगें कितने बच्चे निजी स्कूलों में पढ़ते जो वैज्ञानिक बने कितने बच्चे निजी स्कूलों में पढ़ करके और स्कूल भी ऐसा बनाता है कि पुरा स्कूल का बिल्डिंग एयरकंडिशन, बस एयरकंडिशन, घर में तो अमीर है तो घर में एयरकंडिशन लगा ही हुआ है वो तो कोई मौसम के बारे में नहीं जानता

है कि गर्मी में कैसी फिलिंग होती है जाड़े में कैसी फिलिंग होता है वो तो जान ही नहीं पाता जो मौसम को नहीं जानेगा कठिनाई को नहीं झेलेगा उसमें वो मौलिकता आ नहीं सकती जबतक वो इन झंझावातों से नहीं जुझेगा तो क्या समझ पायेगा मौसम को। इस मिट्टी को लोगों की मिजाज को लोगों की कठिनाई को खुद नहीं देखेगा तो कैसे पता चलेगा। यह हमलोंगो को चप्पल कब पहनने को मिला, ई.. हवाई चप्पल नया–नया आया था। हमको लगता है कि तीसरा उसरा क्लास में पहुंच गये थे तब पिताजी मंगवा दिये थे हवाई चप्पल। उसके पहले खाली पैर बच्चा को कहां मिलता था पहन्ने के लिए आज देखिये तो पैदा हेते ही सब सुविधा अब वो जो एयरकंडिशन स्कूल निजी स्कूल में पढ़ेगा मां–बाप को काफी पैसा पढ़ा रहे रहों लेकिन उसके व्यक्तित्व का र्स्वागीण विकास नहीं हो सकता। यह बात सही है उस बच्चे ने अपने दर्द को वयां किया है। तो मेरी तो पुरी शुभकामना है और ये डर मन से निकाल देना चाहिए कि जो गांव के या कस्बों के या सरकारी स्कलों से निकलकर आते हैं। आज किसी भी क्षेत्र में मैने चर्चा कर दी चाहे स्पेशल में ही। आज आई०पी०एस० कौन बनता है। भाई इतना आई0 ए० एस0 कौन बनता है जाकर के देख लीजीये। आ0पी0एस0 कौन बनता है बड़े–बड़े यूनिवर्सिटीज में प्रोफेसर कौन बनते हैं। डॉक्टर, इंजीनियर सब को देखिये गा तो ऐसा नहीं है प्रतिभाएं कहीं भी हो सकती है और उस बच्चे के प्रतिभा को मैने देखा है। मेरी पुरी शुभकामना है उनके मां बाप से यही कहेंगे की बच्चे पर ध्यान दीजिए और मेरे जैसे व्यक्ति से व्यक्तिगत रूप से जो बनेगा और क्या उसके मन में, क्या तम्मना है तो हम कह दिये, तो कि अगर प्रधानमंत्री बने तो कोई बन सकता है। चाय वाला बन सकता है तो पान वाला काहे नहीं बन सकता है। ये तो खुशी की बात है। मेरे लिए तो नई सरकार बनीं है इसका हमको कोई खुशी नहीं है लेकिन एक बात की कभी–कभी हम भी मान लेते है कि भाई कोई बन सकता है। अगर कोई अपने आप को चाय वाले के रूप में प्रजेन्ट किया तो वो भी बन सकता है। कोई बन सकता है। ये अच्छी बात है। मै तो पोजिटिव कंसेप्ट लेता हूं,

इसको मैं सकारात्मक रूप से लेता हूं मैं इसको उपहास के रूप में नहीं लेता हूं यही एक मात्र खासियत है, बाकि कुछ नहीं। क्योंकि अच्छे दिन किसी के आये नहीं और अच्छे दिन सिर्फ उन्हीं लोगों के आये गये बाकि लोग अच्छे दिन का इंतजार करते रहते है। 15–20 लाख काला धन जब वापिस लायेंगे आ.. 15–20 लाख सब को देंगे 15–20 लाख को छोड दीजिए 15–20 हजार रुपया भी जन–धन खातावालों को दे देते तो मान लेते तो किसी अच्छा दिन आया नहीं है। ये बात अपनी जगह पर है। पूरा का पूरा साल समय बर्बाद हो गया लोगों की जमीन कैसे ली जाये इसी में लोग लगे हुए रहते है भाई ये कभी–कभी मौका मिलता है प्रधानमंत्री जी को देश में रहने का, यह अच्छी बात है। मैं इन सब उनके काम–काज से संतुष्ट नहीं हूं लेकिन इस एक घटना से मुझे भी अच्छा लगता है तो इस लिए इस बच्चे में अगर ये भावना है तो सब में भावना आनी चाहिए। पहले चाहत होगी तब न कुछ प्राप्त करेगा अगर चाहत होगी मन में तमन्ना होगी तो उसको प्राप्त करने के लिए आदमी को उपक्रम करना पड़ेगा आगे बढ़ना पड़ेगा और आगे बढ़े सब लोग आगे बढ़े अब क्या सब के वोट का मान बराबर है ये तो आजादी के जो हमारे राष्ट्रनायक थे उनकी देन है उनका सोच अब किसी को वोट का अधिकार मिला बालिग मताधिकार मिला। स्त्रियों को अधिकार मिला यूरोप में न जाने कितनी लड़ाई के बाद महिलाओं को मिला। पहले पढ़े–लिखे लोगों को मिला लेकिन अपना संविधान महान है ऐसा संविधान बना कि हर नागरिक को बालिग मताधिकार मिला ये सबसे बड़ी चीज है ये जो वोट का अधिकार है ये सबसे महत्वपूर्ण अधिकार है। इस लिए इस अधिकार को समझिये ये वोट किसमत बदलती है। आपका वोट फैसला करेगा। कौन सता में जायेगा आपने अपने वोट से कुछ निर्णय लिया आप निर्णय लेते है। वो अपनी जगह है आप जिसे भी वोट दीजिए सोच समझकर वोट दीजिए और बिहार में चुनाव का वक्त आ रहा है तरह–तरह का लोग माहॉल पैदा करेंगे। साथ चलने वाले लोग आज कल ऐसी–ऐसी बात बोलते हैं, मै तो कुछ बोलता नही हूँ हम तो इंगलिस बोलते हैं आप सुनते है,

मेरी आदत नहीं है। बिना वजह क्यों मुहँ लगाते चलें। कल तक जो मेरी प्रशंसा करते थे आज उनको निंदा करने के शिवाय कोई काम ही नहीं बचा है। इतनी प्रशंसा करते थे काम–काज की प्रशंसा करते थे। निंदा ही करते रहते है। उसमें उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। हम अपने रास्ते पर चल रहे हैं, काम पर चल रहें है। अपना काम करेंगे। और आपलोगों का प्रेम और स्नेह रहेगा तो हम काम करते जायेंगे। हमको लोगों की सेवा करनी है। बहुत लोगों को बहुत चीज करने आता है। हमको कुछ आता हीं नहीं है। शिवाय इसके कि कैसे काम करें। अब आपदा आ गयी तो आपदा पीड़ितों की सेवा कैसे की जाये। कहीं झंझट हो रहा है तो झंझट कैसे खत्म हो जाये। सड़क कैसे बन जाये। स्कूल कैसे बन जाये। अस्पताल कैसे बन जाये। हमारे नागरिकों को सुविधाएँ कैसे मिल जाये। बिहार कैसे तरक्की करें। बिहार के लोग बिहार के बाहर हंसी का पात्र बने रहते थे। आज जब बिहारी बाहर है, हंसी का पात्र नहीं है। अब बिहारियों को लोग सम्मान की दृष्टि से देखते है। पहले लोग समझते थे बिहार में कुछ हो ही नहीं सकता आज जब बहुत कुछ हुआ तो लोगों को इस बात का एहसास हुआ कि बिहार भी कुछ कर सकता है बिहार में कुछ हो सकता है। आज लोग जाते हैं बाहर वो काम करने के तौर तरिकें और काम की प्रशंसा करते है। लेकिन अब चुनाव का समय आ गया है तब काम को कौन पुछता है आज कल काम पीछे चला जाता है। कितनों काम करते रहिए पीछे चला जाता है। लेकिन आप से हम कहेंगे कि बहुत लोग आयेंगे। पर्दा डालने की कोशिश करेंगे। आंख में धूल झोंकने की कोशिश करेंगे। चक्कर में मत पड़ियेगा। कुछ होगा नहीं। हम काम करने वाले है काम करते रहेंगें। जब तक जनता का प्रेम है, स्नेह है, सहयोग है, समर्पण है, तबतक काम करेंगे। उसके अलावे हमको इसकी चिंता नहीं रहती है। हमने तो छोड़छाड़ दिया था बीच में। अब जिनको बैठा दिया आजकल उनका सुनते हैं श्रीमुख से उलूल–जूलूल। एक–से–एक भाषण रोज देता है। माने जमाना कहां पहुँच गया। तो हम तो जीवन में बहुत कुछ देखें है। अब देव कुमार चौरसिया जिनके चलते नाराज

होकर चले गये वहीं चलें गये। तो सब हम ये सब देखते रहते हैं। लेकिन अब इससे कभी मेरा मन नहीं टूटता है। मेरा मन इतना कमजोर नहीं है। हम बिहार के लोगों के प्रति प्रतिबद्ध है। हम अगर करेंगे तो लोगों के भले के लिए, लोगो के बुरे के लिए हमसे कोई काम नहीं होगा। आ चाहे दुनिया का कोई पद हमकों मिले लेकिन अगर कोई चाहेगा कि ये गलत करें होशो हवास में मुझसे ये संभव नहीं है। मैं इतना ही जानता हूँ। अपने को और आप से भी हम कहेंगे अगर धन्यवाद दे रहे है मुझकों त... धन्यवाद का मतलब कुछ समझते है मुह से धन्यवाद होता है क्या। काम से धन्यवाद होता है।